FAIZANE ILM V ULMA (HINDI)

इ़ल्म व उ़लमा की अहम्मिय्यत पर एक नायाब तह़रीर

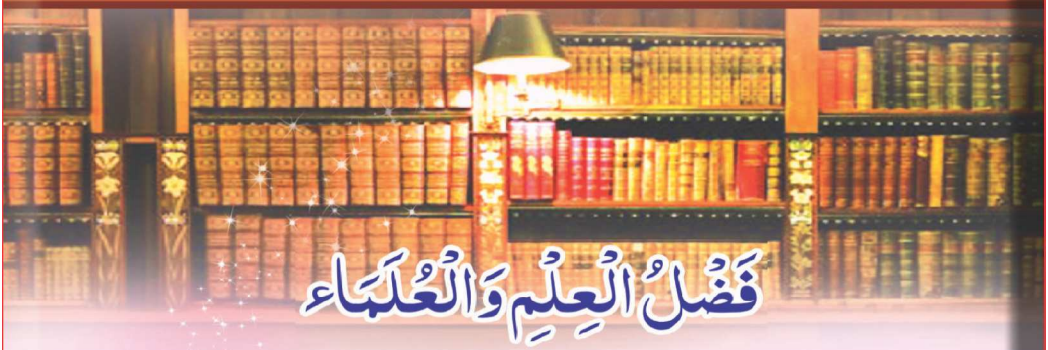

فَضْلُ الْعِلْمِ وَالْعُلَمَاء

तस्हील ब नाम

फ़ैज़ाने इ़ल्म व उ़लमा

मुसन्निफ़

रईसुल मुतकल्लिमीन

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان

(अल मुतवफ़्फ़ा 1297 हि.)

(دعوتِ اسلامی)

शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مُستَطرَف ج ١ص٤٠ دارالفكر بيروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

ता़लिबे ग़मे मदीना बक़ीअ़ व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इ़ल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عَساكِر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने इ़ल्म व उ़लमा

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह रिसाला "उर्दू" ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **"हिन्दी"** रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या WhatsApp) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح	
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ	
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ء
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ॅ = ٗ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड,

बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

इल्म व उ़लमा की अहम्मिय्यत पर एक नायाब तहरीर

فَضْلُ الْعِلْمِ وَالْعُلَمَاء

तस्हील बनाम

फ़ैज़ाने इल्म व उ़लमा

-: मुसन्निफ़ :-

रईसुल मुतकल्लिमीन

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان

(अल मुतवफ़्फ़ा 1297 हिजरी)

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना देहली- 6

A-3

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

नाम किताब : فَضْلُ الْعِلْمِ وَالْعُلَمَاء
तस्हील बनाम : फ़ैज़ाने इ़ल्म व उ़लमा
मुसन्निफ़ : रईसुल मुतकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان
पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
सिने त़बाअ़त : शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1436 हिजरी जून 2015 ईसवी
ता'दाद : 5000 (पांच हज़ार)
नाशिर : मक्तबतुल मदीना देहली – 6

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, पहला मन्ज़िला, 50 टनटन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई-400009, महाराष्ट्र 09022177997
❁ नागपुर :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र 07304052526
❁ अजमेर :- 19 / 216, फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान (0145) 2629385
❁ हुबली :- ए जे मुधोल कोम्पलेक्स, ए जे मुधोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक 08363244860
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना (040) 24572786
❁ बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. 09369023101

www.dawateislami.net
E.mail:ilmia@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह तस्हील शुदा किताब छापने की इजाज़त नहीं

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़हा	उ़नवान	सफ़हा
पहले इसे पढ़ लीजिये	1	उ़लमा की फ़ज़ीलत में अहादीस व आसार	13
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	5	आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत	13
विलादत	5	इ़ल्म के सबब बख़्शिश	13
ता'लीमो तर्बिय्यत	5	सब से बड़े सख़ी	13
दीनी ख़िदमात	5	शुहदा का ख़ून और उ़लमा की सियाही	14
विसाले बा कमाल	6	उ़लमा शफ़ाअ़त करेंगे	14
आग़ाज़े सुख़न	7	राहे इ़ल्म में मरने की फ़ज़ीलत	15
इ़ल्म, दीन का कुतुब है	7	70 सिद्दीक़ीन का सवाब	15
इ़ल्म ज़िन्दगी और जहालत मौत	7	फ़िरिश्ते साया करते हैं	15
क़ुरआने करीम में फ़ज़ाइले उ़लमा का बयान	8	आ़लिम की ज़ियारत की फ़ज़ीलत	15
इ़ल्म की तीन फ़ज़ीलतें	8	इ़ल्म वालों से भलाई का इरादा	16
आ़लिम की गवाही की शान	9	अ़ज़ाब से बचाने वाली शै	16
मरातिब की बुलन्दी	9	अम्बिया के वारिस	17
कमाले ईमान और ख़ौफ़े ख़ुदा का ज़रीआ़	10	फ़िरिश्तों की दुन्या में चर्चे	17
इ़ल्म वाले ही डरते हैं	10	मजलिसे इ़ल्म में हाज़िरी की फ़ज़ीलत	18
मौलवी का मा'ना व मफ़्हूम	11	हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा भारी	18
क़ुरआने करीम समझने वाले	12	उ़लमा पर रह़मतों का नुज़ूल	19
आ़लिम और जाहिल बराबर नहीं	13	दरजए नबुव्वत से क़रीब तर	19
		मरने के बा'द इ़ल्म का फ़ाइदा	20
		अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दोस्त	20

www.dawateislami.net

आ़लिम की अफ़्ज़लिय्यत	21
रात भर इ़बादत से बेहतर	21
आ़बिद व आ़लिम की मौत में फ़र्क़	21
आस्मान में आ़लिम का मक़ाम	22
इ़ल्म की रुकावटों और इन के इ़लाज का बयान	23
इ़ल्म के मवानेअ़ और इन के दफ़ीए़	23
पहली रुकावट	23
दूसरी रुकावट	23
तीसरी रुकावट	24
चौथी रुकावट	24
बादशाहों के ह़ाकिम	25
इ़ल्म चाहिये या बादशाहत ?	25
ह़ज़राते अम्बिया और इ़ल्म	25
इ़ल्म की लज़्ज़त	26
पांचवीं रुकावट	26
छटी रुकावट	27
मजलिसे उ़लमा के सात फ़ाइदे	28
सातवीं रुकावट	29
आठवीं रुकावट	29
इ़ल्म और उ़लमा की ख़िदमत का बयान	30
इमदादे इ़ल्म के लिये अग़नियाए इस्लाम से ख़िता़ब	30
इ़ल्म की इशाअ़त का सवाब	31
मख़्लूक़ की बरबादी का सबब	32
आ़लिम की तख़्लीक़ का मक़्सद	33
ग़फ़्लत से बेदार हो जाओ !	34
बा'ज़ मालदारों के तीन उ़ज़्र	34
ग़नी त़ालिबे इ़ल्म को ज़कात लेना कैसा ?	36
माख़ज़ो मराजेअ़	37

कामिल मोमिन की निशानी

हुज़ूरे अकरम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स नेकी पर ख़ुश और बुराई पर ग़मगीन होता है वोह (कामिल) मोमिन है।" (المستدرک للحاکم، ۱/ ۱۹۳، حدیث: ۳۶)

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के वालिदे माजिद ताजुल उ़लमा, रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان (विलादत : 1246 हिजरी, वफ़ात : 1297 हिजरी) ने मुख़्तलिफ़ उ़न्वानात पर तक़रीबन 40 कुतुबो रसाइल तस्नीफ़ फ़रमाए, जिन में से एक **'फ़ज़्लुल इ़ल्म व उ़लमा'** भी है। इस मुख़्तसर मगर कसीर और अ़ज़ीम फ़वाइद पर मुश्तमिल रिसाले में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हुसूले इ़ल्म की फ़ज़ीलत, उ़लमा व त़लबा की शानो अ़ज़मत, इन की सोह़बत की बरकत और इन की माली मुआ़वनत को कुरआनो ह़दीस और बुज़ुर्गों के अक़्वाल की रोशनी में बड़े ही ख़ूब सूरत अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है।

रिसाला चूंकि **अल्लाह** तआ़ला के एक कामिल वली का है और बड़ी ख़ूबियों पर मुश्तमिल है नीज़ एक अ़र्से से नायाब था, इस लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) से इस बात की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाई कि मजलिस इस रिसाले को किताबत के जदीद तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ तस्हील व तख़रीज वग़ैरा के साथ त़ब्अ़ (शाएअ़) करवाने की तरकीब बनाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के हुक्म पर येह सआ़दत शो'बए तराजिमे कुतुब (अ़रबी से उर्दू) के ह़िस्से में आई। शो'बे ने इस पर दर्जे ज़ैल काम किये हैं :

﴿1﴾....आयाते मुबारका P.D.F से पेस्ट की गई हैं ताकि ग़लती का इमकान कम हो।

www.dawateislami.net

﴾2﴿....जहां आयाते मुबारका का तर्जमा मुश्किल था वहां मतन में हिलालैन () के साथ या फिर ह़ाशिये में **'तर्जमए कन्ज़ुल ईमान'** से तस्हील की गई है।

﴾3﴿....अह़ादीसे मुबारका की तख़रीज ह़त्तल मक़्दूर अस्ल माख़ज़ से की गई है।

﴾4﴿....मुश्किल अल्फ़ाज़ की तस्हील सादा और मुनक़्क़श हिलालैन में दी गई है और बड़े जुम्लों की तस्हील ह़ाशिये में, जब कि ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه या मह़शी व मुतर्जिम की त़रफ़ से दी गई तस्हील को 12 के अ़दद के साथ हिलालैन में रखा गया है।

﴾5﴿....उ़मदतुल अज़्किया अ़ल्लामा मुह़म्मद अह़मद मिस्बाह़ी زِيْدَ مَجْدُهٗ (सदरुल मुदर्रिसीन अल जामिअ़तुल अशरफ़िय्या मुबारक पूर, हिन्द) के तराजुम व ह़वाशी को बर क़रार रखा है।

﴾6﴿....तस्हील के लिये ह़त्तल मक़्दूर आसान और आ़म फ़ह्म अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये हैं।

﴾7﴿....ज़रूरी और मुफ़ीद ह़वाशी का इज़ाफ़ा भी किया गया है।

﴾8﴿....आयात व रिवायात और मज़ामीन के पेशे नज़र नए उ़न्वानात क़ाइम किये हैं नीज़ बुज़ुर्गों के नामों के साथ 'ह़ज़रते सय्यिदुना' और 'दुआ़इय्या कलिमात' का इज़ाफ़ा किया है।

﴾9﴿....अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े अवक़ाफ़) का भी एहतिमाम किया गया है।

﴾10﴿....जिन फ़ारसी अश्आ़र का तर्जमा नहीं था उन का तर्जमा कर दिया गया है।

﴾11﴿...उ़न्वानात और माख़ज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त भी बनाई गई है।

दुआ़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस रिसाले को हर आ़म व ख़ास के लिये नफ़्अ़ बख़्श बनाए और हमें इस मुख़्तसर रिसाले को न सिर्फ़ ख़ुद मुकम्मल पढ़ने की बल्कि दीगर इस्लामी भाइयों तक पहुंचाने की भी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़े मुसन्निफ़

(रईसुल मुतकल्लिमीन मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن)

विलादत :

ताजुल उ़लमा, रासुल फ़ु-ज़ला, रईसुल मुतकल्लिमीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की विलादते बा सआ़दत यकुम रजबुल मुरज्जब 1246 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1830 ईसवी, बरेली शरीफ़ के मह़ल्ला ज़ख़ीरा में हुई।

ता'लीमो तर्बिय्यत :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उ़लूमे अ़क़्लिय्या व नक़्लिय्या की ता'लीम और दीनी तर्बिय्यत अपने वालिदे माजिद मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से पाई। आप को मुख़्तलिफ़ उ़लूम व फ़ुनून पर कामिल महारत ह़ासिल थी गोया कि आप इ़ल्म व अ़मल का ठाठें मारता समन्दर थे।

दीनी ख़िद्मात :

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ज़बान व बयान, दर्स व तदरीस और तस्नीफ़ व तालीफ़ के ज़रीए़ जो दीनी ख़िदमात सर अन्जाम दी हैं वोह एक मुसल्लमा ह़क़ीक़त हैं। आप ने सारी ज़िन्दगी दीन की नश्रो इशाअ़त और नामूसे रिसालत की ह़िफ़ाज़त के लिये मुसलसल कोशिश फ़रमाई।

आप ने मुख़्तलिफ़ उ़लूम व फ़ुनून और मौज़ूआ़त पर बे मिसाल किताबें लिखीं। आप के शहज़ादे मुजद्दिदे आ'ज़म, सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने आप की 25 से ज़ियादा किताबों का तज़किरा किया है। आप की मत़बूआ़ कुतुब में से

www.dawateislami.net

اَلْکَلَامُ الْاَوْضَحُ فِیْ تَفْسِیْرِ اَلَمْ نَشْرَح और سُرُوْرُ الْقُلُوْبِ فِیْ ذِکْرِ الْمَحْبُوْب (अल मा'रूफ़ : अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा) ने ज़ियादा शोहरत पाई। फ़न्ने तह़रीर व तक़रीर के साथ साथ आप एक मायानाज़ मुदर्रिस भी थे। आप के शागिर्दों में से आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान और मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا की शख़्सिय्यात किसी तआ़रुफ़ की मोह़ताज नहीं।

विसाले बा कमाल :

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का विसाल मुबारक 30 ज़ुल क़ा'दा 1297 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 1880 ईसवी को 51 साल की उ़म्र में हुवा। तदफ़ीन आप के वालिदे माजिद के पहलू में हुई।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(माख़ूज़ अज़ : "**ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान, ह़यात और इल्मी व अदबी कारनामे**" मत़बूआ़ : इदारा तह़क़ीक़ाते इमाम अह़मद रज़ा, बाबुल मदीना, कराची)

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा ह़सरत उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ़ उठाया लेकिन उस ने नफ़अ़ न उठाया (या'नी इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق، ۵۱/۱۳۸)

www.dawateislami.net

आग़ाज़े सुख़न

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ، وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ وَاَصۡحَابِہٖ اَجۡمَعِیۡن

इ़ल्म, दीन का क़ुत़ुब है :

बा'द ह़म्दो सलात के वाज़ेह़ हो कि येह चन्द फ़ज़ाइल व फ़वाइद इ़ल्मे दीन के, वासिते़ त़रग़ीबे मोअमिनीन के (मुसलमानों के शौक़ के लिये) लिखे जाते हैं। इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इ़ल्म मदारे कार और क़ुत़ुबे दीन है (या'नी इ़ल्म दीनो दुन्या में कामयाबी की बुन्याद है)।[1] फ़िल वाक़ेअ़ (ह़क़ीक़त में) कोई कमाल दुन्या व आख़िरत में बे (बिग़ैर) इस सिफ़त (इ़ल्म) के ह़ासिल और ईमान बे (बिग़ैर) इस के कामिल नहीं होता। मिस्रअ़ा कि

بے عِلم نتواں خدا را شناخت[2]

इसी जगह (वजह) से कहते हैं कि कोई राह जनाबे अह़दिय्यत (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ (नज़दीक) इ़ल्म से क़रीब तर और कोई चीज़ ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) के नज़दीक जह्ल (बे इ़ल्मी) से बद तर नहीं।

इ़ल्म ज़िन्दगी और जहालत मौत :

اَلْعِلْمُ بَابُ اللّٰہِ الْاَقْرَبُ، وَالْجَھْلُ اَعْظَمُ حِجَابٍ بَیْنَکَ وَبَیْنَ اللّٰہِ۔[3]

1.... احیاء علوم الدین، کتاب العلم، الباب الاول فی فضل العلم الخ، ۱/ ۲۹

2...बिग़ैर इ़ल्म के ख़ुदा को पहचान नहीं सकते। 12 मीम

3...इ़ल्म **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का क़रीब तर दरवाज़ा है और जह्ल (बे इ़ल्मी) तुम्हारे और ख़ुदा (तआ़ला) के दरमियान सब से बड़ा हिजाब (बड़ी रुकावट) है। 12 मीम

www.dawateislami.net

इ़ल्म मूजिबे ह़यात (ज़िन्दगी का बाइ़स) बल्कि ऐ़ने ह़यात और जहूल (बे इ़ल्मी) मूरिसे मौत (मौत का सबब) बल्कि ख़ुद मौत है।

لَا تَعْجَبْ عَلَى الْجَهُوْلِ حِلْيَةً فَذَاكَ مَيِّتٌ وَثَوْبُهُ كَفَنٌ[1]

अगर ख़ुदा (तआ़ला) के नज़दीक कोई शी (शै) इ़ल्म से बेहतर होती आदम عَلَيْهِ السَّلَام को मुक़ाबलए मलाइका (फ़िरिश्तों के मुक़ाबिल) में दी जाती। तस्बीह़ व तक़्दीस (पाकी बयान करना) फ़िरिश्तों की, 'इ़ल्मे अस्मा' के बराबर न ठहरी (तो फिर) इ़ल्मे ह़क़ाइक़ व दीगर उ़लूमे दीनिय्या की बुज़ुर्गी किस मर्तबे में होगी ?[2] मिस्रअ़ :

قِیاس کُن زِ گُلِستانِ مَن بَہارِ مَرا[3]

क़ुरआने करीम में फ़ज़ाइले उ़लमा का बयान

इ़ल्म की तीन फ़ज़ीलतें :

आयात : (पहली आयत) अल्लाह جَلَّ جَلَالُهُ وَعَمَّ نَوَالُهُ फ़रमाता है :

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓىِٕكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآىِٕمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ (پ۳، آل عمران:۱۸)

गवाही दी **अल्लाह** ने कि कोई बन्दगी के लाइक़ नहीं सिवा उस के और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने। वोह (**अल्लाह**) बा इन्साफ़ (इन्साफ़ वाला) है।

इस आयत से तीन फ़ज़ीलतें इ़ल्म की साबित हुईं :

1....जाहिल के जिस्म पर (मौजूद) किसी ज़ेवर से ह़ैरत में न पड़ो कि वोह तो मुर्दा है और उस का जामा (लिबास) कफ़न (है।) 12 मुतर्जिम

(تفسیر النسفی، پ۹، سورۃ الانفال، تحت الآیۃ: ۲۴، ص۴۰۹، بتغیر لفظ)

2....या'नी जब इ़ल्मे अस्मा की येह शान है तो फिर इ़ल्मे ह़क़ाइक़ वग़ैरा का क्या मक़ाम होगा !

3.....मेरे बाग़ से ही मेरी बहार का अन्दाज़ा कर ले।

www.dawateislami.net

अव्वल : ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ ने उ़लमा को अपने और फ़िरिश्तों के साथ ज़िक्र किया और येह ऐसा मर्तबा है कि निहायत (इन्तिहा 12) नहीं रखता।

दुवुम : इन (उ़लमा) को फ़िरिश्तों की त़रह़ अपनी वह़दानिय्यत (एक होने) का गवाह और इन की गवाही को वजहे सुबूते उलूहिय्यत (अपने मा'बूद होने की दलील) क़रार दिया।

सिवुम : इन (उ़लमा) की गवाही मानिन्दे गवाहिये मलाइका के (फ़िरिश्तों की गवाही की त़रह़) मो'तबर ठहराई।

आ़लिम की गवाही की शान :

दूसरी आयत : (इस आयत) में (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने) अपनी और आ़लिम की गवाही को काफ़ी फ़रमाया :

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْۙ وَ مَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ۠ (پ۱۳، الرعد: ۴۳)

कह (तुम फ़रमाओ) काफ़ी है **अल्लाह** गवाह मेरे और तुम्हारे बीच में और वोह शख़्स जिस के पास इ़ल्म किताब का है।

मरातिब की बुलन्दी :

तीसरी आयत :

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْۙ وَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍؕ (پ۲۸، المجادلة: ۱۱)

या'नी **अल्लाह** तआ़ला बुलन्द करेगा उन लोगों के जो ईमान लाए तुम में से और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया है दरजे।[1]

1....**अल्लाह** तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया दरजे बुलन्द फ़रमाएगा। (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान**)

www.dawateislami.net

यहां (इस आयत) से साबित हुवा कि इ़ल्म ईमान की त़रह़ बुलन्दिये मरातिब का सबब है।

कमाले ईमान और ख़ौफ़े ख़ुदा का ज़रीआ़ :

चौथी आयत :

وَالرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ (پ۳،اٰل عمرٰن:۷)

और पक्के लोग इ़ल्म में (पुख़्ता इ़ल्म वाले) कहते हैं हम (इस पर) ईमान लाए सब हमारे रब के पास से है और नसीह़त नहीं मानते मगर अ़क़्ल वाले।

येह आयत अहले इ़ल्म के कमाले ईमान व अ़मल और निहायत (इन्तिहाई 12) इन्क़ियाद (ताबेअ़ दारी 12) पर दलालत करती है।

इ़ल्म वाले ही डरते हैं :

पांचवीं आयत :

اِنَّمَا یَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ (پ۲۲،فاطر:۲۸)

जुज़्ीं नीस्त (इस के इ़लावा बात कुछ नहीं) कि डरते हैं **अल्लाह** के बन्दों में से उ़लमा।[1]

और वजह इस ह़स्र की (या'नी डर को उ़लमा के साथ ख़ास करने की वजह) ज़ाहिर है कि जब तक इन्सान ख़ुदा के क़ह्र (ग़ज़ब) और बे परवाही (बे नियाज़ी) और अह़वाले दोज़ख़ और अह़वाले क़ियामत (क़ियामत की हौलनाकियों) को बित्तफ़्सील (तफ़्सील के साथ)

1.....**अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।

(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान)

www.dawateislami.net

नहीं जानता (उस वक़्त तक) ह़क़ीक़त ख़ौफ़े ख़शिय्यत की उस को ह़ासिल नहीं होती और तफ़्सील इन चीज़ों की उ़लमा के सिवा किसी को मा'लूम नहीं

मौलवी का मा'ना व मफ़्हूम :

छटी आयत :

وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ﴿۷۹﴾ (پ۳، اٰل عمرٰن:۷۹)

व लेकिन तुम हो जाओ **अल्लाह** वाले ब सबब किताब सिखाने तुम्हारे और ब सबब दर्स करने तुम्हारे के ।[1]

यहां (इस आयते मुबारका) से ज़ाहिर हुवा कि मुक़्तज़ाए इ़ल्म (इ़ल्म का तक़ाज़ा) येह है कि आदमी तमाम आ़लम से अ़लाक़ा (तअ़ल्लुक़ 12) क़त़्अ़ (ख़त्म) कर के ख़ुदा ही का हो जावे और उसी से काम रखे । इसी वासित़े आ़लिम को '**मौलवी**' कहते हैं, मन्सूब ब मौला या'नी **अल्लाह वाला** ।

सातवीं आयत :

مَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ؕ (پ۳، البقرۃ:۲۶۹)

जो ह़िक्मत दिया गया बहुत भलाई दिया गया ।

1....**अल्लाह** वाले हो जाओ इस सबब से कि तुम किताब सिखाते हो और इस से कि तुम दर्स करते हो । (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान**)

www.dawateislami.net

और ज़ाहिर है कि जो बहुत भलाई दिया गया उस का मर्तबा भी बहुत बड़ा होगा।

क़ुरआने करीम समझने वाले :

आठवीं आयत :

وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ (پ۲۰، العنکبوت: ۴۳)

येह कहावतें बयान करते हैं हम उन लोगों के लिये और नहीं समझते उन को मगर जानने वाले (या'नी इ़ल्म वाले)।

नवीं आयत :

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ (پ۲۰، القصص: ۸۰)

कह उन लोगों ने जो इ़ल्म दिये गए ख़राबी तुम पर सवाब ख़ुदा का बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छा काम करे।

यहां (इस आयते त़य्यिबा) से ज़ाहिर हुवा कि क़द्रो मन्ज़िलत दारे आख़िरत की (आख़िरत का मक़ाम व मर्तबा) उ़लमा ही ख़ूब जानते हैं।

आ़लिम और जाहिल बराबर नहीं :

दसवीं आयत :

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ (پ۲۳، الزمر: ۹)

तो कह (तुम फ़रमाओ) क्या बराबर हैं वोह लोग कि जानते हैं और वोह लोग जो नहीं जानते।

या'नी जाहिल किसी त़रह़ आ़लिम के मर्तबे को नहीं पहुंचता।

www.dawateislami.net

(उ़लमा की फ़ज़ीलत में) अह़ादीस व आसार

आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत :

﴿1﴾....तिर्मिज़ी ने रिवायत किया कि रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने दो आदमियों का ज़िक्र हुवा, एक आ़बिद दूसरा आ़लिम । आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : فَضْلُ الْعَالِمِ عَلَى الْعَابِدِ كَفَضْلِيْ عَلٰى اَدْنَاكُمْ (तर्जमा) बुज़ुर्गी (फ़ज़ीलत) आ़लिम की आ़बिद पर ऐसी है जैसे मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे कमतर पर ।[1]

इ़ल्म के सबब बख़्शिश :

﴿2﴾....और वारिद हुवा (या'नी ह़दीस शरीफ़ में आया है) कि जब परवर दगार عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन अपनी कुरसी पर वासिते फ़ैसला बन्दों के (या'नी बन्दों के दरमियान फ़ैसला फ़रमाने) बैठेगा (जैसा कि उस की शान के लाइक़ है तो) उ़लमा से फ़रमाएगा :

اِنِّيْ لَمْ اَجْعَلْ عِلْمِيْ وَحِلْمِيْ فِيْكُمْ اِلَّا وَاَنَا اُرِيْدُ اَنْ اَغْفِرَ لَكُمْ وَلَا اُبَالِيْ	ख़ुलासए मा'ना येह है कि मैं ने अपना इ़ल्म व ह़िल्म (नर्मी) तुम को सिर्फ़ इसी इरादे से इ़नायत किया कि तुम को बख़्श दूं और मुझे कुछ परवाह नहीं ।[2]

सब से बड़े सख़ी :

﴿3﴾....बैहक़ी रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बड़ा जवाद (सब से ज़ियादा नवाज़ने वाला) है ।

---

1 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، ۴/ ۳۱۳، حدیث: ۲۶۹۴

2.....المعجم الکبیر، ۲/ ۸۴، حدیث: ۱۳۸۱

www.dawateislami.net

और मैं सब आदमियों में बड़ा सख़ी हूं और मेरे बा'द उन में बड़ा सख़ी वोह है जिस ने कोई इ़ल्म सीखा फिर उस को फैला दिया।[1]

शुहदा का ख़ून और उ़लमा की सियाही :

﴿4﴾....(इमाम) ज़हबी ने रिवायत किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन उ़लमा की दवातों की सियाही और शहीदों का ख़ून तोला जाएगा, रोशनाई (सियाही) उन की दवातों की शहीदों के ख़ून पर ग़ालिब आएगी।[2]

उ़लमा शफ़ाअ़त करेंगे :

﴿5﴾....इह़याउल उ़लूम में मरफ़ूअ़न[3] रिवायत करते हैं कि ख़ुदाए तआ़ला क़ियामत के दिन आ़बिदों और मुजाहिदों को हुक्म देगा बिहिश्त (जन्नत) में जाओ। उ़लमा अ़र्ज़ करेंगे : इलाही ! इन्हों ने हमारे बतलाने से इ़बादत की और जिहाद किया। हुक्म होगा : तुम मेरे नज़दीक बा'ज़ फ़िरिश्तों की मानिन्द हो, शफ़ाअ़त करो कि तुम्हारी शफ़ाअ़त क़बूल हो। पस (उ़लमा पहले) शफ़ाअ़त करेंगे फिर बिहिश्त (जन्नत) में जावेंगे।[4]

1...شعب الایمان، باب فی نشر العلم، ۲/ ۲۸۱، حدیث: ۱۷۶۷، باختصار

2...جامع بیان العلم و فضلہ، باب تفضیل العلماء علی الشھداء، ص۴۸، حدیث: ۱۳۹

3.....मरफ़ूअ़ उस ह़दीस को कहते हैं जिस की सनद हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंचती हो। (نزھۃ النظر فی توضیح نخبۃ الفکر، ص۱۰۶)

4...احیاء علوم الدین، کتاب العلم، الباب الاول فی فضل العلم الخ، ۱/ ۲۶

www.dawateislami.net

राहे इ़ल्म में मरने की फ़ज़ीलत :

﴾6﴿....और ह़दीस शरीफ़ में आया कि जो शख़्स त़लबे इ़ल्म में मर जाएगा ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) से मिलेगा दरां ह़ाल येह कि (इस ह़ाल में कि) उस में और पैग़म्बरों में दरजए नबुव्वत (और इस के कमालात) के सिवा कोई दरजा न होगा।[1]

70 सिद्दीक़ीन का सवाब :

﴾7﴿....और ह़दीस में आया है जो शख़्स एक बाब इ़ल्म का औरों (दूसरों) के सिखाने के लिये सीखे उस को सत्तर (70) सिद्दीक़ों का अज्र दिया जावे।[2]

फ़िरिश्ते साया करते हैं :

﴾8﴿....और मआ़लिमुत्तन्ज़ील में लिखा है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स त़लबे इ़ल्म में सफ़र करता है फ़िरिश्ते अपने बाज़ूओं से उस पर साया करते हैं और मछलियां दरया में और आस्मानो ज़मीन उस के ह़क़ में दुआ़ करते हैं।[3]

आ़लिम की ज़ियारत की फ़ज़ीलत :

﴾9﴿....(ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम ग़ज़ाली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي) ने रिवायत किया कि आ़लिम को एक नज़र देखना साल भर की नमाज़ व रोज़े से बेहतर है।[4]

---

1 ... سنن الدارمی، المقدمة، باب فی فضل العلم والعالم، ۱/ ۱۱۲، حدیث: ۳۵۴

2 ... الترغیب والترهیب، کتاب العلم، الترغیب فی العلما لخ، ۱/ ۶۸، حدیث: ۱۱۹

3 ... ابوداود، کتاب العلم، باب فی کتاب العلم، ۳/ ۴۴۵، حدیث: ۳۶۴۱، بتغیر

4 ... منهاج العابدین، الباب الاول، ص ۱۱

www.dawateislami.net

इ़ल्म वालों से भलाई का इ़रादा :

﴾10﴿....बुख़ारी और तिर्मिज़ी ने ब सनदे सह़ीह़[1] रिवायत किया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ بِهٖ خَيْرًا يُّفَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ (तर्जमा) ख़ुदाए तआ़ला जिस के साथ भलाई का इरादा करता है उसे दीन में दानिश मन्द (दीन की समझ अ़त़ा) करता है ।[2]

'अश्बाह वन्नज़ाइर' में लिखा है कि कोई आदमी अपने अन्जाम से वाक़िफ़ नहीं होता सिवा फ़क़ीह[3] के, (क्यूंकि वोह) ब इख़्बारे मुख़्बिरे सादिक़ (सच्ची ख़बरें देने वाले नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बताने से) जानता है (कि) उस के साथ ख़ुदा (तआ़ला) ने भलाई का इरादा किया है ।[4]

अ़ज़ाब से बचाने वाली शै :

दुर्रे मुख़्तार में (ह़ज़रते सय्यिदुना) इस्माईल बिन अबी रजा (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) से मन्क़ूल है कि मैं ने इमाम मुह़म्मद (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) को ख़्वाब में देखा । ह़ाल पूछा । (इन्हों ने) कहा :

1....सह़ीह़ ह़दीस से मुराद "वोह ह़दीसे पाक है जिस की सनद मुत्तसिल हो, उस के रावी आ़दिल और ताम्मुल ज़ब्त़ हों और वोह ह़दीस ग़ैर शाज़ और ग़ैर मुअ़ल्लल हो ।" (نزهة النظر في توضيح نخبة الفكر، ص٥٨)

2...بخاری، کتاب العلم، باب العلم قبل القول والعمل، ۱/ ۴۱

3....उ़लमाए उसूल के नज़्दीक **फ़क़ीह** वोह आ़लिम है जो शरई व फ़ुरूई अह़काम को इन के तफ़्सीली दलाइल के साथ जानता हो और फ़ुक़हा के नज़्दीक अह़कामे शरइ़य्या और मसाइले शरइ़य्या का इ़ल्म ह़ासिल कर के इन को याद कर लेने वाला **फ़क़ीह** कहलाता है जब कि सूफ़िया और आ़रिफ़ीन के नज़्दीक फ़क़ीह वोह शख़्स है जो अह़कामे शरीअ़त को जानने के बा'द इन पर अ़मल करे ।

(درمختار مع ردالمحتار، مقدمة الكتاب، ۱/ ۹۸، ملخصاً)

4...الاشباہ والنظائر، الفن الثالث: الجمع والفرق، ص۳۳۷

www.dawateislami.net

मुझे ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) ने बख़्श दिया और फ़रमाया : अगर मैं तुझ पर अ़ज़ाब करना चाहता, इ़ल्म इ़नायत न फ़रमाता ।[1]

अम्बिया के वारिस :

﴾11﴿....अबू दावूद ने (ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स त़लबे इ़ल्म में (किसी) एक राह चले ख़ुदा उसे बिहिश्त (जन्नत) की राहों से एक राह चला दे और बेशक फ़िरिश्ते अपने बाज़ू त़ालिबे इ़ल्म की रिज़ा मन्दी के वासित़े बिछाते हैं और बेशक आ़लिम के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं सब ज़मीन वाले और सब आस्मान वाले यहां तक कि मछलियां पानी में और बेशक फ़ज़्ल आ़लिम का आ़बिद पर ऐसा है जैसे चौदहवीं रात के चांद की बुज़ुर्गी (फ़ज़ीलत) सब सितारों पर और बेशक उ़लमा वारिस अम्बिया के हैं और बेशक पैग़म्बरों ने दिरहम व दीनार मीरास न छोड़ी (बल्कि) इ़ल्म को मीरास छोड़ा है पस जो इ़ल्म ह़ासिल करे उस ने बड़ा ह़िस्सा ह़ासिल किया ।[2]

फ़िरिश्तों की दुन्या में चर्चे :

﴾12﴿....और सह़ीह़ मुस्लिम की रिवायत में वारिद हुवा कि जो शख़्स त़लबे इ़ल्म में कोई राह चलेगा ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) उस के लिये बिहिश्त (जन्नत) की राह आसान करेगा और जब कुछ लोग ख़ुदा (तआ़ला) के घरों से किसी घर में जम्अ़ हो कर किताबुल्लाह पढ़ते हैं और आपस में

---

1 ...الدر المختار معہ رد المحتار، المقدمۃ، مطلب: یجوز تقلید المفضول...الخ، ۱/ ۱۲۵

2 ...ابوداود، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، ۴/ ۴۴۴، حدیث: ۳۶۴۱

www.dawateislami.net

दर्स करते (पढ़ते पढ़ाते) हैं उन पर सकीना नाज़िल होता है और रह़मत उन को ढांप लेती है और फ़िरिश्ते उन को हर त़रफ़ से घेर लेते हैं और ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) अपने पास वालों के सामने उन का ज़िक्र करता है[1] या'नी फ़िरिश्तों पर उन की ख़ूबी और अपनी रिज़ामन्दी उन से ज़ाहिर फ़रमाता है।

मजलिसे इ़ल्म में ह़ाज़िरी की फ़ज़ीलत :

﴿13﴾....और (ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़दीस में है : आ़लिम की मजलिस में ह़ाज़िर होना हज़ार रक्अ़त नमाज़, हज़ार बीमारों की इ़यादत और हज़ार जनाज़ों पर ह़ाज़िर होने से बेहतर है। किसी ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और क़िराअते क़ुरआन ? या'नी क्या इ़ल्म की मजलिस में ह़ाज़िर होना क़िराअते क़ुरआन से भी अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : आया (क्या) क़ुरआन बे (बिग़ैर) इ़ल्म के नफ़्अ़ बख़्शता है ?[2] या'नी फ़ाइदा क़ुरआन का बे इ़ल्म के ह़ासिल नहीं होता।

हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा भारी :

﴿14﴾....इमाम मुह़िय्युस्सुन्ना बग़वी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) मआ़लिमुत्तन्ज़ील में लिखते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : एक फ़क़ीह शैत़ान पर हज़ार आ़बिद से ज़ियादा भारी है।[3]

---

1 ...مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ القرآن، ص۱۴۴۷، حدیث: ۲۶۹۹

2 ...قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا الخ، ۱/ ۲۵۷

3 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، ۴/ ۳۱۱، حدیث: ۲۶۹۰

www.dawateislami.net

और वजह इस की ज़ाहिर है कि आ़बिद अपने नफ़्स को दोज़ख़ से बचाता है और आ़लिम एक आ़लम (बहुत से लोगों) को हिदायत फ़रमाता है और शैत़ान के मक्रो फरेब से आगाह करता है।(1)

उ़लमा पर रह़मतों का नुज़ूल :

﴾15﴿....और तिर्मिज़ी की ह़दीस में है : तह़क़ीक़ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) और उस के फ़िरिश्ते और सब ज़मीन वाले और सब आस्मान वाले यहां तक कि च्यूंटी अपने सूराख़ में और यहां तक कि मछली येह सब दुरूद भेजते हैं इ़ल्म सिखाने वाले पर जो लोगों को भलाई सिखाता है।(2)

दरजए नबुव्वत से क़रीब तर :

﴾16﴿....(ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम गज़ाली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى) इह़याउल उ़लूम में रिवायत करते हैं कि

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : नज़्दीक तर लोगों के (लोगों में से) दरजए नबुव्वत से उ़लमा व मुजाहिदीन हैं।(3)

1....

صاحِبْدِلے بَمدرَسَہٗ آمْدِ ز خَانْقاہ — بشکست عہدِ صُحبتِ اہْلِ طریق را
گُفتَم مِیانِ عالِم و عابد چہ فَرق بُود — تاکَردِی اختیار آزاں اِیں فَریق را
گُفْت اُوگلیم خَویش بِرُوں مِی بُرَد زِ مَوج — وِیں جُہد کُنَدْ کہ بِگیرَد غَریق را

तर्जमा : एक आ़रिफ़ आ़बिदों से अ़हदे हम नशीनी तोड़ कर, ख़ानक़ाह (मक़ामे गोशा नशीनी व इ़बादत गाह) छोड़ कर मेरे मद्रसे में आ गया, मैं ने उस से कहा : आ़लिम व आ़बिद के दरमियां क्या फ़र्क़ था ? इन दो में से सोह़बते उ़लमा को तू ने क्यूं इख़्तियार किया ? उस ने जवाब दिया : आ़बिद तलातुम ख़ैज़ मौजों से सिर्फ़ ख़ुद को बचाए और आ़लिम कोशिश करता है कि डूबते को बाहर निकाल लाए। (गुलिस्तान)

2 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، ۴/ ۳۱۳، حدیث: ۲۶۹۴

3...احیاء علوم الدین، کتاب العلم، الباب الاول فی فضل العلما لخ، ۱/ ۲۰

www.dawateislami.net

या'नी इन (उ़लमा व मुजाहिदीन) का मर्तबा पैग़म्बरों के मर्तबे से ब निस्बते तमाम ख़ल्क़ (मख़्लूक़) के क़रीब है कि अहले इ़ल्म उस चीज़ पर जो पैग़म्बर लाए दलालत करते हैं और अहले जिहाद उस चीज़ पर कि पैग़म्बर लाए तल्वारों से लड़ते हैं।[1]

मरने के बा'द इ़ल्म का फ़ाइदा :

﴿17﴾....मुस्लिम की ह़दीस में है कि जब आदमी मरता है उस का अ़मल मुन्क़तअ़ हो जाता है मगर (इ़लावा) तीन चीज़ों से : (1) कोई सदक़ए जारिया छोड़ गया या (2) ऐसा इ़ल्म जिस से लोगों को नफ़अ़ हो या (3) लड़का सालेह़ (नेक अवलाद) कि उस (मरने वाले) के वासिते़ दुआ़ करे।[2] या'नी तीन चीज़ों का फ़ाइदा मरने के बा'द भी बाक़ी रहता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दोस्त :

﴿18﴾....(ह़ज़रते सय्यिदुना) इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से इरशाद हुवा : ऐ इब्राहीम ! मैं अ़लीम हूं, हर अ़लीम को दोस्त रखता हूं[3] या'नी इ़ल्म मेरी सिफ़त है और जो मेरी इस सिफ़त (इ़ल्म) पर है वोह मेरा मह़बूब है।

1....या'नी उ़लमा हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन लोगों तक पहुंचाते हैं और मुजाहिदीन शरीअ़त की हि़फ़ाज़त के लिये कुफ़्फ़ार से लड़ते हैं।

2 ...مسلم، کتاب الوصیۃ، باب مایلحق الانسان الخ، ص۸۸۶، حدیث:۱۶۳۱

3 ...جامع بیان العلم وفضلہ، ص۷۰، حدیث:۲۱۳

www.dawateislami.net

आ़लिम की अफ़्ज़लिय्यत :

﴾19﴿....(ह़ज़रते सय्यिदुना) मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि आ़लिम रोज़ादार शब बेदार (या'नी आ़लिम, दिन रात इ़बादत करने वाले) मुजाहिद से अफ़्ज़ल है।

रात भर इ़बादत से बेहतर :

﴾20﴿....किसी ने मुज्तहिद (ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू बक्र (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) से पूछा कि फ़क़ीह को क़िराअते क़ुरआन बेहतर है या दर्से फ़िक़्ह ? फ़रमाया : अबू मुत़ीअ़ (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) से मन्क़ूल है कि हमारे अस्ह़ाब की किताबों को बिग़ैर क़स्द सीखने के (सिर्फ़) देखना शब बेदारी (रात भर इ़बादत) से बेहतर है।[1]

﴾21﴿....(ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मुझे एक मस्अला सीखना रात भर की इ़बादत से ज़ियादा अ़ज़ीज़ है।[2]

आ़बिद व आ़लिम की मौत में फ़र्क़ :

﴾22﴿....(ह़ज़रते सय्यिदुना) उ़मर (फ़ारूक़) رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه कहते हैं : हज़ार आ़बिद क़ाइमुल लैल (रात में इ़बादत करने वालों और) साइमुन्नहार (दिन में रोज़ा रखने वालों) का मरना एक आ़लिम की "कि ख़ुदा के ह़लाल व ह़राम पर सब्र करता है" मौत के बराबर नहीं[3]।[4]

---

1 ... المحیط البرھانی، کتاب الاستحسان والکراھیۃ، الفصل الثانی و الثلاثون فی المتفرقات، ۶/ ۱۵۳

2 ... الفقیہ والمتفقہ، فضل التفقہ علی کثیر من العبادات، ۱/ ۱۰۲، حدیث: ۵۵

3....या'नी एक हज़ार इ़बादत गुज़ारों की मौत एक बा अ़मल आ़लिम की मौत के बराबर नहीं।

4 ... جامع بیان العلم وفضلہ، باب تفضیل العلم علی العبادۃ، ص ۴۲، حدیث: ۱۱۵

www.dawateislami.net

आस्मान में आ़लिम का मक़ाम :

﴾23﴿....(ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम ग़ज़ाली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى) लिखते हैं कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) ईसा عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमाते हैं : 'आ़लिमे बा अ़मल' को मलकूते आस्मान (आस्मान की सल्त़नत) में 'अ़ज़ीम' या'नी बड़ा शख़्स कहते हैं ।[1]

इसी त़रह़ फ़ज़ाइल व फ़वाइद इस सिफ़त (इ़ल्म) के इख़्बार व आसार (अह़ादीस व रिवायात) में बे शुमार वारिद हैं, सिर्फ़ येह बात कि वोह सिफ़त जनाबे अह़दिय्यत (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) और ह़ज़रते रिसालत (ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की है, उस की फ़ज़ीलत में किफ़ायत करती (काफ़ी) है ।[2] भलाई दोनों जहान की इ़ल्म से ह़ासिल होती है और सआ़दते दारैन ब वसीला इस सिफ़त के (या'नी दोनों जहां की भलाई इ़ल्म के सबब) हाथ आती है । जाहिल दर ह़क़ीक़त ह़ैवाने मुत़लक़ है कि फ़ज़्ल इन्सान का (इन्सान की फ़ज़ीलत) 'नात़िक़' (कलाम) है पस आदमी को लाज़िम है कि इस दौलते उ़ज़्मा की तह़सील (इ़ल्म ह़ासिल करने) में कोशिश करता रहे[3] और इस के मवानेअ़ (रोकने वाले उमूर) को दफ़्अ़ (दूर) करे ।

---

1 ...الزهد للامام احمد، مواعظ عيسى عليه السلام، ص٩٧، حديث: ٣٣٠

2....या'नी इ़ल्म की फ़ज़ीलत के लिये येही काफ़ी है कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सिफ़त है ।

3.... اُغْدُ مُعَلِّمًا اَوْ مُتَعَلِّمًا اَوْ مُسْتَمِعًا اَوْ مُحِبًّا وَلَا تَكُنِ الْخَامِسَ فَتَهْلِكَ

तर्जमा : सुब्ह़ को निकल मुअ़ल्लिम (सिखाने वाला) हो कर या मुतअ़ल्लिम (सीखने वाला) हो कर या सामेअ़ (इ़ल्म की बात सुनने वाला) हो कर या इ़ल्म दोस्त हो कर और पांचवां न बन कि हलाक हो । 12 मीम

(شعب الايمان، باب فى طلب العلم، فصل فى طلب العلم وشرف مقداره، ٢/ ٢٦٥، حديث: ١٧٠٩)

www.dawateislami.net

इ़ल्म की रुकावटों और इन के इ़लाज का बयान

इ़ल्म के मवानेअ़[1] और इन के दफ़ीए़ :[2]

और मवानेअ़ इस सिफ़त के (या'नी इ़ल्म की राह में रुकावटें) आठ (8) हैं।

मानेए़ अव्वल ﴾पहली रुकावट﴿ :

शैत़ान कि जिस क़दर अ़दावत (दुश्मनी) इ़ल्म से रखता है दूसरी सिफ़त से नहीं रखता और जिस क़दर वस्वसे इस काम से रोकने के लिये दिल में डालता है किसी काम से रोकने के लिये नहीं डालता।

मगर ब त़रीक़े दफ़्अ़ (दूर करने का त़रीक़ा) इस का सह्ल (आसान) है कि जब मुसलमान इ़ल्म की फ़ज़्ल व बुज़ुर्गी और त़ालिबे इ़ल्म के सवाब को कि शम्मा (या'नी कुछ अज्रो सवाब) उस का मज़्कूर हुवा तसव्वुर करेगा (तो) शैत़ान की बात हरगिज़ न सुनेगा। आयत व ह़दीस के मुक़ाबले में इस मलऊ़न का वस्वसा क्या ए'तिबार रखता है?

मानेए़ दुवुम ﴾दूसरी रुकावट﴿ :

नफ़्स कि मेह़नत मशक़्क़त से मुतनफ़्फ़िर (नफ़रत करता) और आसाइश व राह़त की त़रफ़ माइल है। लेकिन जब आदमी ख़याल करता है कि दुन्या दारे फ़ानी (फ़ना का घर) और आख़िरत आ़लमे जाविदानी (हमेशगी का घर) है, अगर यहां (दुन्या में) त़लबे इ़ल्म में थोड़ी मेह़नत कि हज़ारों लुत़्फ़ व कैफ़िय्यत से ख़ाली नहीं इख़्तियार करूंगा उस आ़लम (आख़िरत) में बड़े बड़े मर्तबे पाऊंगा तो मेह़नत व मशक़्क़त उसे

1....रुकावटें।

2....इलाज।

www.dawateislami.net

सह्ल (आसान) हो जाती है यहां तक कि बा'द एक अ़र्सा के ऐसा मज़ा और लुत्फ़ ह़ासिल होता है कि अगर एक रोज़ किताब नहीं देखता दिल बे चैन हो जाता है।

मानेए सिवुम ﴾तीसरी रुकावट﴿ :

ख़ल्क़ (मख़्लूक़) कि तअ़ल्लुक़ इस से तह़सीले इ़ल्म को मानेअ़ (रुकावट) होता है। लेकिन इबतिदाए अम्र (शुरूअ़) में थोड़ा वक़्त इस काम के वासिते ख़ास कर सकता है और जब कैफ़िय्यत (लुत़्फ़ो लज़्ज़त) इ़ल्म की ह़ासिल होती है (तो) अज़ ख़ुद (अपने आप) किताब के सिवा तमाम आ़लम से नफ़रत हो जाती है।

هَمْنَشِنے بِه اَز کتاب مَخواه   که مُصاحِب بوَد گه و بے گاه
اِیں چُنِیں هَمدَم و رَفیق که دِید   که نرَنجِد و هَم نرَنجانَد [1]

मानेए चहारुम ﴾चौथी रुकावट﴿ :

त़लबे इ़ज़्ज़त। और अदना तअम्मुल (मा'मूली ग़ौरो फ़िक्र) से ज़ाहिर होता है कि इ़ज़्ज़ते दुन्या की, इ़ज़्ज़ते आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ ह़क़ीक़त नहीं रखती। जो शख़्स दुन्या के लिये इ़ल्म को कि इ़ज़्ज़ते आख़िरत का सबब है तर्क करता है, दर ह़क़ीक़त अपनी जान ज़िल्लत में डालता है और जो इ़ल्म को दुन्या की जाहो ह़श्मत (इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत) पर तरजीह़ देता है ख़ुदाए عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्या की इ़ज़्ज़त भी इनायत करता है।

1....किताब से ज़ियादा बेहतर दोस्त तू मत चाह ! क्यूं कि येह वक़्त व बे वक़्त (हर ह़ाल में) साथ रहे, ऐसा रफ़ीक़ व हम नशीन किसी ने देखा ? कि जो न नाराज़ हो और न सताए।

www.dawateislami.net

बादशाहों के ह़ाकिम :

(ह़ज़रते सय्यिदुना) अबू अस्वद (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) कहते हैं : इ़ल्म से किसी चीज़ की इ़ज़्ज़त ज़ियादा नहीं । बादशाह सब लोगों के ह़ाकिम हैं और उ़लमा बादशाहों के ।[1] देखो इस ज़माने (में 12) भी जो कुछ लिख देते हैं हुक्कामे वक़्त अहले इस्लाम के मुक़द्दमात में इस पर अ़मल करते हैं ।

इ़ल्म चाहिये या बादशाहत ?

(ह़ज़रते सय्यिदुना) इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मन्क़ूल है कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) सुलैमान (عَلَیْہِ السَّلَام) को इ़ल्म और माल में मुख़य्यर किया गया (इख़्तियार दिया गया) कि मुल्क (बादशाहत) व माल लो या इ़ल्म इख़्तियार करो । आप (عَلَیْہِ السَّلَام) ने इ़ल्म इख़्तियार किया, मुल्क व माल भी ह़ासिल हुवा ।[2]

ह़ज़राते अम्बिया और इ़ल्म :

ऐ अ़ज़ीज़ ! इ़ल्म से बेहतर कोई चीज़ नहीं । (ह़ज़रते सय्यिदुना) आदम عَلَیْہِ السَّلَام को इ़ल्मे अस्मा (अश्या के नामों के इ़ल्म) ने मसजूदे मलाइका (फ़िरिश्तों से सजदे की ने'मत) और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र को इ़ल्मे लदुन्नी[3] ने उस्ताज़िये मूसा عَلَیْہِمَا السَّلَام (का शरफ़ दिलवाया) और (ह़ज़रते सय्यिदुना) यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام को इ़ल्मे ता'बीर

1...احیاء العلوم، کتاب العلم، الباب الاول فی فضل العلم الخ، ١/ ٢٢

2...التفسیر الکبیر، پ١، سورۃ البقرۃ، تحت الآیۃ:٣١، ١/ ٤١٠

3....मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया : इ़ल्मे लदुन्नी वोह है जो बन्दे को ब त़रीक़े इल्हाम (बिग़ैर सीखे दिल में) ह़ासिल हो ।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पारह 15, अल कह्फ़, तह़्तुल आयत : 65)

www.dawateislami.net

(ख़्वाबों की ता'बीर के इ़ल्म) ने मिस्र की बादशाही और (ह़ज़रते सय्यिदुना) सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को इ़ल्मे मन्तिक़ुत्तै़र (परन्दों की बोलियां समझने के इ़ल्म) ने बिल्क़ीस सी औ़रत (दिलवाई) और (ह़ज़रते सय्यिदतुना) मरयम को इ़ल्मे ई़सा عَلَيْهِ السَّلَام ने तशनीए क़ौम (लोगों की मलामत) से नजात दी। एक नुक्तए इ़ल्मी (इ़ल्म की मा'ना खे़ज़ बात) ने मोरे ज़ई़फ़ (कमज़ोर च्यूंटी 12) का येह मर्तबा किया कि परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने उस का क़िस्सा कुरआन में बयान फ़रमाया। जो शख़्स इ़ल्म की क़द्रो मन्ज़िलत जानता है सल्त़नते हफ़्त किश्वर (सारी दुन्या की बादशाहत) उस के नज़्दीक कुछ क़द्रो क़ीमत नहीं रखती।

इ़ल्म की लज़्ज़त :

नक़्ल (मन्क़ूल) है कि एक उम्मीदवार बादशाह के दरबार में गया। बादशाह ने कहा : तू जाहिल है, हमारी ख़िदमत के लायक़ (लाइक़) नहीं। उस ने इमाम ग़ज़ाली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی) से इ़ल्म ह़ासिल किया और उस की लज़्ज़त और दुन्या की आफ़त और सोह़बते मुलूक व उमरा की मज़र्रत (बादशाहों और सरदारों की सोह़बत के नुक़्सान) से वाक़िफ़ हुवा। एक रोज़ बादशाह ने उसे बुलाया और इम्तिह़ान के बा'द फ़रमाया : अब तू हमारी मुलाज़मत के लायक़ (लाइक़) हो गया, जो ओ़हदा चाहिये ह़ाज़िर है। उस ने कहा : जब (उस वक़्त) मैं आप के काम का न था और अब आप मेरे काम के नहीं, जब आप ने मुझे पसन्द न किया और अब मैं आप को पसन्द नहीं करता।

मानेए पन्जुम ﴾पांचवीं रुकावट﴿ :

तह़सीले माल (माल का ह़ुसूल) और ज़ाहिर है कि सरवते फ़ानी (दौलते फ़ानी) उस दौलते बाक़ी के बराबर नहीं हो सकती। माल रह जाता है और इ़ल्म क़ब्र में साथ जाता है और हर वक़्त मदद करता

www.dawateislami.net

रहता है यहां तक कि बिहिश्त (जन्नत) में ले जाता है। माल ख़र्च करने से घटता है और इ़ल्म पढ़ाने (दूसरों को सिखाने) से बढ़ता है। मालदार माल का निगहबान है और इ़ल्म आ़लिम की निगहबानी करता है। इलावा बरीं (नीज़) जो शख़्स खुदा (तआ़ला) के वासिते़ तह़सीले माल पर त़लबे इ़ल्म को तरजीह़ देता है खुदा (عَزَّوَجَلَّ) उसे मोह़ताज नहीं रखता। (ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम ग़ज़ाली (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى) इह़याउल उ़लूम में रिवायत करते हैं :

مَنْ تَفَقَّهَ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ كَفَاهُ اللّٰهُ تَعَالٰى مَا اَهَمَّهُ وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِب

(तर्जमा) जो शख़्स दीने खुदा में दानाई ह़ासिल करता है खुदाए तआ़ला جَلَّ شَانُہٗ उस को उस चीज़ से कि ग़मगीन करे किफ़ायत करता है (या'नी उस के ग़मों को दूर करता है) और उस को ऐसी जगह से कि नहीं जानता रिज़्क़ पहूंचाता है[1]।[2]

मानेए शशुम ﴾छटी रुकावट﴿ :

ख़त़रे मआल (अन्जाम का ख़ौफ़) कि जब आदमी क़िल्लते उ़म्र (मुख़्तसर जिन्दगी) और कमिये फ़ुरसत (फ़राग़त की कमी) को ख़याल करता है घबरा कर कहता है : "इ़ल्म बह़्रे बे किनार (वसीअ़ समन्दर) है, इस थोड़े वक़्त में उ़बूर इस से (इसे पार कर लेना) दुश्वार है।" और येह (ख़याल) मह़्ज़ जहालत है। हर चन्द (किसी सूरत) कमाल इस दौलत का (सारा का सारा इ़ल्म) किसी को ह़ासिल नहीं होता यहां तक कि सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुक्म होता है :

1....या'नी उसे वहां से रोज़ी देता है जहां से उस का गुमान न हो।

2...احياء علوم الدين، كتاب العلم، الباب الاول فى فضل العلما الخ، ١/٢١

www.dawateislami.net

قُلْ رَّبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا-[1] मगर कोई त़ालिबे इ़ल्म मह़रूम नहीं रहता।

नतीजा उ़लूमे दीनिय्या का (दीनी उ़लूम की इन्तिहा) किसी ह़द पर मौक़ूफ़ नहीं जिस क़दर ह़ासिल होगा फ़ाइदा बख़्शेगा। बिल फ़र्ज़ अगर मत़लब (जितना इ़ल्म ह़ासिल करना मक़्सूद हो उस) को नहीं पहुंचेगा और इस (इ़ल्म की) त़लब में मर जाएगा (तो) क़ियामत के दिन उ़लमा के गुरौह में उठेगा।

येह फ़ाइदा क्या कम है जो मआल (अन्जाम) का अन्देशा और ग़म है ? وَلِلّٰہِ دَرُّ مَنْ قَالَ (किसी ने क्या ख़ूब कहा :)

دَر راہِ تُو بِمیرَم گرچِہ تُرا نَہ بِینَم بارے خَلاص یا بَم اَز ننگِ زِندگانی[2]

मजलिसे उ़लमा के सात फ़ाइदे :

(ह़ज़रते सय्यिदुना) फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स आ़लिम की मजलिस में जावे उस को सात फ़ाइदे ह़ासिल होते हैं अगर्चे उस से इस्तिफ़ादा (या'नी अपनी कोशिश से कोई फ़ाइदा ह़ासिल) न करे।

﴾1﴿ **अव्वल :** जब तक उस मजलिस में रहता है गुनाहों और फ़िस्क़ो फुजूर से बचता है।

﴾2﴿ **दुवुम :** त़लबा में शुमार किया जाता है।

﴾3﴿ **सिवुम :** त़लबे इ़ल्म का सवाब पाता है।

1....तुम फ़रमाओ ऐ मेरे रब ! मुझे इ़ल्म में ज़ियादा कर। 12 मुतर्जिम (पारह 16, त़ाहा : 114)

2....तेरी राह में मर जाता हूं अगर्चे तुझे नहीं देखता, ऐसी रुस्वा ज़िन्दगी से एक दफ़्अ़ छुटकारा पा जाऊं।

www.dawateislami.net

﴾4﴿ **चहारुम :** उस रह़मत में कि जल्सए इ़ल्म (इ़ल्म की मजलिस) पर नाज़िल होती है शरीक होता है।

﴾5﴿ **पन्जुम :** जब तक इ़ल्मी बातें सुनता है इ़बादत में है।

﴾6﴿ **शशुम :** जब कोई दक़ीक़ (मुश्किल) बात उन (उ़लमा) की इस की समझ में नहीं आती (तो) दिल इस का टूट जाता है और शिकस्ता दिलों (टूटे दिल वालों) में लिखा जाता है।(1)

﴾7﴿ **हफ़्तुम :** इ़ल्मो उ़लमा की इ़ज़्ज़त और जह्ल व फ़िस्क़ (बे अ़मली व बुराई) की ज़िल्लत से वाक़िफ़ हो जाता है।(2)

कहता हूं मैं : जो सवाब कि आ़लिम की ज़ियारत और उस की मजलिस में ह़ाज़िर होने पर मौऊ़द (या'नी जिस सवाब का वा'दा) है (वोह) इस से इ़लावा है।

मानेए हफ़्तुम ﴾सातवीं रुकावट﴿ :

न मिलना उस्ताज़े शफ़ीक़ का (या'नी मेहरबान उस्ताज़ का न मिलना भी ह़ुसूले इ़ल्म में रुकावट बनता है।)

मानेए हश्तुम ﴾आठवीं रुकावट﴿ :

फ़िक्रे मुआ़श (कमाने की फ़िक्र) और मुराद इस से ब क़दरे ज़रूरत है कि ज़ाइद (ज़रूरत से ज़ियादा) ज़ाइद (फ़ुज़ूल) है।

---

1 ....**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 318 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब 'फ़ज़ाइले दुआ़' सफ़ह़ा 70 पर मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الحَنَّان फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला दिले शिकस्ता से बहुत क़रीब है। ह़दीसे क़ुदसी में है : (اَنَا عِنْدَ الْمُنْكَسِرَةِ قُلُوْبُهُمْ لِاَجْلِى) **तर्जमा :** मैं उन दिलों के पास होता हूं जो मेरी ख़ात़िर टूटते हैं। (مجموعة رسائل الامام الغزالی، بدایة الھدایة، ص۳۹۶)

2...تنبیہ الغافلین، باب فضل مجالس العلم، ص۲۳۷، بتغیر

www.dawateislami.net

और येह दोनों (आख़िरी रुकावटें) ब निस्बत और मवानेअ़ (दीगर रुकावटों) के क़वी (बड़ी) हैं कि जब उस्ताज़ शफ़्क़त से न पढ़ावेगा शागिर्द को क्या आवेगा और जिस को रिज़्क़ न मिलेगा इ़ल्म पर किस त़रह़ मेह़नत करेगा। मिस्रआ़ (मश्हूर है :)

پَراگَندَہ رُوزی پَراگَندَہ دِل[1]

और बड़ी वजह इन (आख़िरी दोनों रुकावटों) की क़ुव्वत की येह है कि दफ़्अ़ (दूर करना) इन का त़लबा के इख़्तियार में नहीं।

इ़ल्म और उ़लमा की ख़िदमत का बयान

इमदादे इ़ल्म के लिये अग़नियाए इस्लाम से ख़िता़ब

हां रुअसाए किराम (मुअ़ज़्ज़ज़ नवाब) और अग़नियाए अहले इस्लाम (दौलत मन्द मुसलमान) अगर एक दो मुदर्रिस (पढ़ाने वाले) और किसी क़दर वज़ीफ़ा त़लबा के वासित़े मुक़र्रर कर दें तो त़लबा इन दोनों मवानेअ़ (रुकावटों) से नजात पा कर ब फ़राग़े ख़ात़िर (दिल जमई के साथ) त़लबे इ़ल्म में कोशिश करें और जिस क़दर सवाब पढ़ाने और पढ़ने वालों को कि ह़द व निहायत नहीं रखता (बे इन्तिहा) मिले उस क़दर (उतना ही) बल्कि उस से ज़ियादा (सवाब) मद्रसा जारी करने वालों ख़ुसूसन उस शख़्स को जो औरों (दूसरों) को इस अम्रे ख़ैर (नेक काम) की तरग़ीब दे ह़ासिल हो।

1 ....तंगदस्ती व ग़रीबी बे सुकूनी व परेशान ह़ाली है।

www.dawateislami.net

इ़ल्म की इ़शाअ़त का सवाब :

सह़ीह़ ह़दीस में आया है : اَلدَّالُّ عَلَی الْخَیْرِ کَفَاعِلِہٖ (**तर्जमा**) भलाई पर दलालत (राहनुमाई) करने वाला मानिन्द भलाई करने वाले के है (या'नी भलाई करने वाले की त़रह़) ।[1]

सिवा इस के (इस ह़दीस शरीफ़ के इ़लावा) सिह़ाह़ सित्ता[2] की और कई ह़दीसें भी इस मज़मून पर दलालत करती हैं । जिस का जी चाहे देख ले और येह भी समझ लो कि अज्र (व सवाब) आ'माल का बा ए'तिबारे अवक़ात व अह़वाल के (वक़्त और ह़ालत के लिह़ाज़ से) मुख़्तलिफ़ होता है । इसी वासिते सवाब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का जिन्हों ने इब्तिदाए इस्लाम में तरवीजे इ़ल्म (इ़ल्म की नश्रो इशाअ़त) और ताईदे दीं (दीने इस्लाम की ह़िमायत व सर बुलन्दी) में जां निसारी (जानों की क़ुरबानियां दीं) और कोशिश की और (दीगर) लोगों के सवाब से मरातिब (दर्जे) में (इन का सवाब) ज़ियादा है । पस जो लोग इस ज़माने में कि वक़्ते ग़ुरबते इस्लाम (इस्लाम से दूरी का ज़माना) है तरवीजे इ़ल्म और ताईदे दीन में कोशिश करेंगे अगले बादशाहों और अमीरों से जिन्हों ने इस बाब (इशाअ़ते इ़ल्म और हिमायते दीन) में सई (कोशिश) की वोह ज़ियादा सवाब पावेंगे कि वोह (बादशाह और अमीर लोग) ब निस्बत इन (इस ज़माने वालों) के ज़ियादा क़ुदरत और सरवत (दौलत) रखते थे और उन के वक़्त में इ़ल्म की रोज़ बरोज़ तरक़्क़ी थी ब ख़िलाफ़ इस ज़माने के कि ख़ल्क़ (मख़्लूक़) मह़ब्बते दुन्या में मश्ग़ूफ़

---

1 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء الدال علی الخیر کفاعلہ، ۴/ ۳۰۵، حدیث: ۲۶۷۹

2....सिह़ाह़ सित्ता से मुराद ह़दीस की छे मश्हूर किताबें : बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दावूद, निसाई और इब्ने माजा हैं ।

www.dawateislami.net

(रग़बत रखती) और ब हमा तन (मुकम्मल तौ़र पर) इस की त़लब में मसरूफ़ है और इ़ल्मे दीन कम होता जाता है, न कोई पढ़ता है न पढ़ाता है।

अगर येही सूरत रही तो चन्द (थोड़े) अ़र्से में इ़ल्म का निशान इन मुल्कों (बर सग़ीर पाक व हिन्द वग़ैरा) में बाक़ी न रहेगा और जब इ़ल्म न रहेगा दीन भी न रहेगा। अ़वाम फ़राइज़ व वाजिबात (फ़र्ज़ और वाजिब बातें), अह़कामे सौमो सलात (नमाज़ व रोज़ा के अह़काम) किस से दरयाफ़्त करेंगे और शैत़ान के वस्वसों और इस के ए'तिराज़ों के जवाब किस से पूछेंगे ? आख़िरे कार गुमराह हो जावेंगे[1] और जो लोग तक़्लीदन (देखा देखी) दीन पर साबित क़दम रहेंगे नाम के मुसलमान रह जावेंगे।

मख़्लूक़ की बरबादी का सबब :

(ह़ज़रते सय्यिदुना) इमाम मुह़िय्युसुन्ना बग़वी सईद बिन जुबैर (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) से नक़्ल करते हैं कि हलाके ख़ल्क़ (मख़्लूक़ की बरबादी) की अ़लामत मौत उ़लमा की है या'नी जब उ़लमा मर जावेंगे लोग हलाक हो जावेंगे।[2]

और (ह़ज़रते सय्यिदुना) अ़त़ा ख़ुरासानी (قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی) قوله تعالی (इस फ़रमाने बारी तआ़ला) اَنَّا نَاْتِی الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا[3] की तफ़्सीर

1....*क्यूं रंग ह़क़ पोश में आओ* *ग़ैरत पकड़ो जोश में आओ*
मज़्हब के आग़ोश में आओ *ग़ाफ़िल बन्दो होश में आओ*
(अक्बर इलाहाबादी)

2...تفسیر البغوی، پ۱۳، سورۃ الرعد، تحت الایۃ:۴۱، ۲/ ۱۹، بتغیر قلیل

3....बेशक हम ज़मीन को इस के किनारों से घटाते आ रहे हैं। 12 मुतर्जिम (پ۱۳، الرعد:۴۱)

www.dawateislami.net

में फ़रमाते हैं कि नुक़्साने ज़मीन से उ़लमा और फ़ुक़हा की मौत मुराद है कि जब उ़लमा न रहेंगे ख़ल्क़ (मख़्लूक़) बेलों और गधों के मानिन्द अ़क़्ल से बे बहरा (महरूम) और शुतरे बे मुहार (आवारा ऊंटों) की त़रह़ बे बाक (बे परवा) और बे क़ैद (आज़ाद) हो जावेंगे। उस वक़्त इन्तिज़ामे आ़लम (दुन्या का निज़ाम) दरहम बरहम हो जावेगा और क़त्ल और ग़ारत और वबा व त़ाऊ़न की कसरत होगी (या'नी इ़ल्म व उ़लमा से महरूमी इन आफ़ात का सबब है)। पस ज़मीन चार त़रफ़ से वीरान और ख़ल्क़ (मख़्लूक़) रोज़ ब रोज़ कम होगी यहां तक कि क़ियामत क़ाइम हो जाए।

आ़लम की तख़्लीक़ का मक़्सद :

और ज़ाहिर है कि मक़्सूदे पैदाइशे आ़लम (जिन्नो इन्स की तख़्लीक़) से (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की) मा'रिफ़त (पहचान) व इबादत है[1] और जब आ़लिम (इ़ल्म वाले) न रहेंगे इबादत कौन करेगा ? और जब आ़लम (जहान) इन दोनों (मा'रिफ़त और इबादत) से ख़ाली हो जावेगा और मक़्सूद पर मुश्तमिल न रहेगा निकम्मा (बेकार) और मिटाने के क़ाबिल ठहरेगा। यहां से ज़ाहिर हुवा कि जिस त़रह़ दीन का बाक़ी रहना बे इ़ल्म दुश्वार है इसी त़रह़ बक़ाए आ़लम (जहान का बाक़ी रहना) भी बे इस (बिग़ैर इ़ल्म) के बेकार। पस इस दौलत (इ़ल्म) को खोना दोनों आ़लम (दुन्या व आख़िरत) की ज़िन्दगी से हाथ धोना है।

1....फ़रमाने बारी तआ़ला है : وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी लिये) बनाए कि मेरी बन्दगी करें। (پ۲۷، الذّٰریٰت:۵۶)

www.dawateislami.net

ग़फ़्लत से बेदार हो जाओ :

ऐ मुसलमानो ! ख़ुदा के वासिते ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो और इ़ल्मे दीन को कि आमादए सफ़रे आख़िरत है (या'नी दुन्या से रुख़्सत होने को है, इसे) रोको । दुन्या के झगड़ों में शबो रोज़ मश्ग़ूल रहते हो किसी वक़्त तो इधर भी तवज्जोह करो । हज़ारों रूपिये आसाइशे फ़ानी (ख़त्म हो जाने वाली राह़त) के वासिते सर्फ़ करते हो कुछ तो राह़ते जाविदानी (हमेशा रहने वाली राह़त) के लिये ख़र्च करो कि वहां तुम्हारे काम आवे और यहां तुम को हर बला से बचावे । एक अ़र्से के बा'द नदामत उठाओगे हर चन्द (कितनी ही) कोशिश करोगे इस दौलत को न पाओगे ।

बा'ज़ मालदारों के तीन उ़ज़्र :

बा'ज़ साहिब ऐसी बातें सुन कर तीन उ़ज़्र पेश करते हैं :

﴾1﴿ **अव्वल :** कहते हैं कि हम नादार (ग़रीब) और क़र्ज़दार हैं ।

सो अगर येह बयान ग़लत़ है जब तो बड़ा ही ग़ज़ब है, बिल फ़र्ज़ अगर ख़ल्क़ (लोगों) ने सच जाना (या'नी इन्हें नादार व क़र्ज़दार समझा मगर) ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) के नज़दीक तो झूटे ठहरेंगे और जो सच है (या'नी अगर ह़क़ीक़त में मुफ़्लिस व क़र्ज़दार हैं) तो दुन्या के कामों में हज़ारों रूपिये बे फ़ाइदा उठाना (ख़र्च करना) और ख़ुदा (तआ़ला) के काम में मआल सोचना (अन्जाम की फ़िक्र करना) निरी नाशुक्री है । अगर क़र्ज़ से डरते (तो ज़रूर) सामाने इमारत (अमीरी की अ़लामात) और तक्लीफ़े रियासत (सरदारी की नुमाइश) दूर करते ।

www.dawateislami.net

﴾2﴿ **दुवुम :** कहते हैं कि हम अपनी तौफ़ीक़ के मुवाफ़िक़ दूसरे अम्रे ख़ैर (नेक काम) में सर्फ़ (ख़र्च) करते हैं।

सो अगर हो सके इस (काम) में भी सर्फ़ करें, नहीं तो दोनों कामों को मीज़ाने अ़क़्ल (अ़क़्ल के तराज़ू) से तोलें जिस में ज़ियादा सवाब देखें इख़्तियार करें।

﴾3﴿ **सिवुम :** कहते हैं : येह काम कुछ फ़र्ज़ नहीं, जिस को ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) तौफ़ीक़ दे (वोह) करे, हम से तो फ़राइज़ भी नहीं अदा हो सकते।

सो येह क्या ज़रूर है जो रोज़ा न रखे नमाज़ भी न पढ़े ! (इन्हें चाहिये कि) फ़राइज़ भी अदा करें और इ़ल्मे फ़राइज़ की तरवीज (नश्रो इशाअ़त) में भी मश्ग़ूल रहें। अगर ज़ियादा न हो सके ब क़दरे ज़कात ही के दें कि ज़कात ख़ुदा (तआ़ला) का क़र्ज़ और इन (मालदारों) पर फ़र्ज़ है। अगर यहां न देंगे क़ियामत के दिन सख़्त मुसीबत में पड़ेंगे।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَ
الْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿۳۴﴾
يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ
فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ
وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ
لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ
تَكْنِزُوْنَ﴿۳۵﴾ (پ۱۰، التوبۃ: ۳۴، ۳۵)

जो लोग जम्अ़ करते हैं सोना और चांदी और उस को ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते उन को बिशारत दे साथ दुख देने वाली मार (दर्दनाक अ़ज़ाब) के जिस दिन गर्म किया जाएगा वोह सोना चांदी दोज़ख़ की आग में फिर दाग़ी जावेगी उस से उन की पेशानियां और करवटें और पीठें या'नी फिर उन से कहा जावेगा येह वोह है जो तुम ने जम्अ़ किया अपनी जानों के लिये पस चखो जो तुम जम्अ़ करते थे।

www.dawateislami.net

ग़नी त़ालिबे इ़ल्म को ज़कात लेना कैसा ?

और येह भी समझ लो कि ग़नी त़ालिबे इ़ल्म को ज़कात लेना जाइज़ है अगर त़लबे इ़ल्म में (दौराने ता'लीम) कस्ब की फ़ुरसत न रखता हो। दुर्रे मुख़्तार में लिखा है :

وَبِهٰذَا التَّعْلِيْلِ يَقْوٰى مَا نُسِبَ لِلْوَاقِعَاتِ مِنْ اَنَّ طَالِبَ الْعِلْمِ يَجُوْزُ لَهٗ اَخْذُ الزَّكٰوةِ وَلَوْ غَنِيًّا الْكَسْبِ، وَالْحَاجَةُ دَاعِيَةٌ اِلٰى مَا لَابُدَّ[1] اِذَا فَرَّغَ نَفْسَهٗ لِاِفَادَةِ الْعِلْمِ وَاسْتِفَادَتِهٖ بِعَجْزِهٖ عَنِ مِنْهُ، هٰكَذَا ذَكَرَهُ الْمُصَنِّفُ

और जो अहले ज़कात एह़तियात़न मोहतमिम मद्रसा से कह दें कि हमारा रूपिया मोह़ताज त़लबा को दिया करो, (येह) बेहतर है।

هٰذَا

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ وَاِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَاٰبُ

اَلْفَقِيْرُ الْعَبْدُ الْمُفْتَقِرُ اِلَى اللّٰهِ الْغَنِيِّ

मुह़म्मद नक़ी अ़ली अल बरैलवी عُفِيَ عَنْه

---

1 ....इस दलील से वोह (क़ौल) क़वी हो जाता है जो 'वाक़िआ़त' की त़रफ़ मन्सूब है कि त़ालिबे इ़ल्म को ज़कात लेना जाइज़ है अगर्चे ग़नी हो जब कि अपने (ख़ुद) को वोह ख़ास इ़ल्म के इफ़ादा व इस्तिफ़ादा (पढ़ने पढ़ाने) के लिये ख़ाली (फ़ारिग़) कर ले क्यूंकि वोह कमाने से क़ासिर (आ़जिज़) होगा और ज़रूरत इतनी मिक़्दार की मुक़्तज़ा (तक़ाज़ा करती) है जो ना गुज़ीर (ज़रूरी व लाज़िमी) है। यूं ही मुसन्निफ़ ने ज़िक्र किया। 12 मुतर्जिम

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
ترجمۂ کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
تفسیر البغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی متوفّٰی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۴ھ
تفسیر النسفی	امام عبد اللہ بن احمد نسفی متوفّٰی ۷۱۰ھ	دار المعرفۃ ۱۴۲۱ھ
التفسیر الکبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر رازی متوفّٰی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
خزائن العرفان	مفتی سید محمد نعیم الدین مراد آبادی متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
سنن الدارمی	امام عبد اللہ بن عبد الرحمن متوفّٰی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی ۱۴۰۷ھ
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ
الزہد	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید ۱۴۲۶ھ
الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبد العظیم منذری متوفّٰی ۶۵۶ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
جامع بیان العلم وفضلہ	حافظ یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
نزہۃ النظر فی توضیح نخبۃ الفکر	حافظ ابن حجر عسقلانی متوفّٰی ۸۵۲ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۲۱ھ
تاریخ بغداد	حافظ ابو بکر احمد بن علی خطیب بغدادی متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
الفقیہ والمتفقہ	حافظ ابو بکر احمد بن علی خطیب بغدادی متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار ابن الجوزی ۱۴۲۸ھ
قوت القلوب	علامہ ابو طالب محمد بن علی مکی متوفّٰی ۳۸۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ

www.dawateislami.net

احیاء العلوم	حجۃ الاسلام امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت
اتحاف السادۃ المتقین	علامہ سید محمد بن محمد زبیدی متوفّٰی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ
تنبیہ الغافلین	امام ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی متوفّٰی ۳۷۳ھ	دار الکتاب العربی ۱۴۲۰ھ
منہاج العابدین	حجۃ الاسلام امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ
المحیط البرہانی	علامہ محمود بن احمد بن عبد العزیز متوفّٰی ۶۱۶ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۴ھ
الاشباہ والنظائر	علامہ ابن نجیم زین الدین بن ابراہیم متوفّٰی ۹۷۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
الدر المختار معہ رد المحتار	علامہ علاء الدین حصکفی محمد بن علی متوفّٰی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفۃ ۱۴۲۰ھ
فضائل دعا	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان متوفّٰی ۱۲۹۷ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۰ھ

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो शख़्स ह़लाल खाए, सुन्नत पर अ़मल करे और लोग उस के शर से महफ़ूज़ रहें वोह जन्नत में दाख़िल होगा।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे लोग तो इस वक़्त बहुत हैं।'' इरशाद फ़रमाया : ''अ़न क़रीब मेरे बा'द भी ऐसे लोग होंगे।'' (المستدرک للحاکم، ۵/ ۱۴۲، حدیث: ۷۱۵۵)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

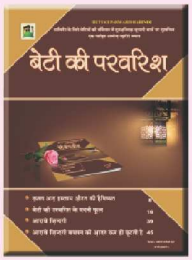

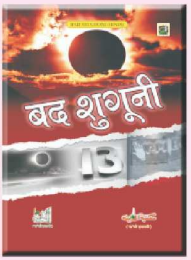

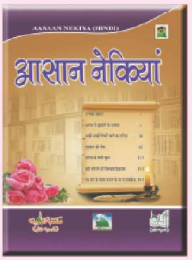

ISBN 978-969-631-356-4
0125084
MC 1286

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATIA MAHAL, JAMA MASJID, DELHI - 1, PH : 011 - 23284560
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, web : www.dawateislami.net